International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 23-02-2026, Accepted: 25-03-2026, Published: 09-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 42-44

भारतीय राजनीति में महिला भागीदारी प्रासंगिकताएवम् चुनौतियाँ

दीपक नाथ[1], डॉ हेमा[2]

[1] शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग,एसएस जे राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय स्याल्दे अल्मोड़ा, सोबन सिहं जीना विश्वविद्यालय, अल्मोडा, उत्तराखण्ड, भारत

[2] विभागाध्यक्षएवम् असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,एसएस जे राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय स्याल्दे अल्मोड़ा, सोबन सिहं जीना विश्वविद्यालय, अल्मोडा, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

लोकतांत्रिक व्यवस्था तभी फलती–फूलती है जब समाज के सभी वर्गो को शासन और निर्णय होने में समान प्रतिनिधित्व प्राप्त हो। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी केवल प्रतिनिधित्व का मामला नहीं है, बल्कि लैंगिक न्याय काएक अनिवार्य घटक भी है महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को प्रगति के सभी पहलुओं मेंएक महत्वपूर्ण कारक केरूप में देखा जाता है। हालांकि लैंगिक समानता पर भारत की नीतियों की जांच जारी है। स्वतन्त्रता के बाद प्राधिकरण के विकेन्द्रीकरण के माध्यम से भारत में कई स्थानीय सरकारी संरचनाओं में महिलाओं की राजनीतिक उपस्थिति को मजबूत करने के लिए कई उपाय किए। पंचायती राज संस्थाओं ने महिलाओं सहित समाज के वंचित क्षेत्रों की नीति संस्थाओं में निर्णय लेने की भूमिका में भागीदारी बढ़ा दी है। इस शोध पेपर का उद्देश्य सबसे बड़े लोकतान्त्रिक देश भारत में राजनीतिक नेतृत्व की भूमिकाओं में महिलाओं के सामने आने वाली समस्याओं को पहचानना है। अध्ययन के निष्कर्षो से पता चलता है कि महिला सशक्तिकरण पर नेतृत्व की भूमिका में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। लेकिन नीति क्षेत्र में महिलाओं को शामिल करने में अभी भी कुछ प्रमुख समस्यायें हैं। इस शोध का मुख्य उद्देश्य लोकतान्त्रिक प्रक्रियाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की बाधाओं (जैसे, सामाजिक, आर्थिक और पितृसत्तात्मक चुनौतियाँ) को पहचानना, पंचायती राज व संसद में उनकी भूमिका का मूल्यांकन करना, और महिला सशक्तिकरण के माध्यम से नीति निर्माण में समानता सुनिश्चित करना है।यह शोधएक अधिक समावेशी, न्यायपूर्ण और सहभागी लोकतन्त्र स्थापित करने के लिए साक्ष्य आधारित समाधान खोजने की दिशा में काम करता है।

मूल शब्दः महिला राजनीतिक भागीदारी, पंचायती राज आरक्षण, पितृसत्तात्मक चुनौतियाँ, लोकसभा प्रतिनिधित्व, लैंगिक समानता,

भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी लोकतंत्र को समावेशी न्यायसंगत और मजबूत बनाने के लिए अत्यन्त प्रांसगिक है, जो नीति निर्माण में जेंडर समानता व सामाजिक विकास सुनिश्चित करती हैयद्यपि संसद में 15ः (18 वीं लोकसभा) तक प्रतिनिधित्व बढ़ा है, फिर भी पितसत्तात्मक बधाएँ, टिकट वितरण में कमी और हिंसा चुनौतियाँ बनी हुई हैं। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम से लेकर वर्तमान तक, महिलाओं ने राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो लोकतन्त्र को सुदृढ़ करता हैं। भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकार और राज्य के नीति निर्देशक तत्व लैंगिक समानता की गारंटी देते हैं। जो महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का आधार है, 17वीं– 18वीं लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लगभग 14–15ः तक पहुँच गया है, जोएक सकारात्मक संकेत है, महिलाओं की भागीदारी से निर्णय लेने की प्रक्रिया में विविधता आती है, जो शिशु मृत्यु दर, कुपोषण और महिला सुरक्षा जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देने में सहायक होती है। पितृसत्तात्मक सोच, सीमित आर्थिक संसाधन, टिकट वितरण असामनता, और हिंसा प्रमुख बाधाएं हैं। 128 वाँ संविधान संशोधन (महिला आरक्षण अधिनियम 2023) और पंचायत स्तर पर 50ः तक आरक्षण ने जमीनी स्तर पर प्रतिनिधित्व को बदला है।

संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व

भारत में 2024 के लोकसभा चुनाव में 74 महिला सांसदों को चुना है, जो 2019 की तुलना में 4 कम और 1952 में भारत के पहले चुनावों की तुलना से 52 अधिक है,ये 74 महिलाएँ निचले सदन की निर्वाचित संख्या का मात्र 13.63ः है, जो कि अगले परिसीमन अभ्यास के बाद महिलाओं के लिए आरक्षित होने वाली 33ः सीटों से काफी कम हैं 2024 के लोकसभा चुनावों में कुल 8360 उम्मीदवारों में से लगभग 10ः ही महिलाएँ थीं।यह संख्या समय के साथ बढी है– 1957 मेंयह 3ः थी।यह पहली बार है, जब महिला उम्मीदवारों का अनुपात 10ः तक पहुँचा है। जबकि भाजपा के लगभग 16ः उम्मीदवार महिलाएँ थी, जबकि कांग्रेस के उम्मीदवारों मेंयह आँकडा 13ः था– दोनों ही समग्र औसत से अधिक हैं।

स्थानीय राजनीति में महिलाओं का प्रतिनिधित्व

भारत में स्थानीय स्तर पर सरकार का तीसरा स्तर है, जिसमें शहरों और कस्बों में नगरपालिकाएँया नगर निगम और ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायती राज संस्थाएं (पी आर आई) शामिल हैं। 73वाँ और 74वाँ संविधानिक संशोधन विभिन्न सामाजिक और आर्थिक विकास कार्यक्रमों की स्थानीय स्तर परयोजना, कार्यान्वयन और निगरानी को बढ़ाने के लिए 1992 में पेश किया गया। इन संशोधनों के तहत स्थानीय निकाय चुनावों में कुल सीटों में सेएक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित की गई, आरक्षण नीति के कारण स्थानीय स्तर पर महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। भारत के 28 राज्यों में से 20 राज्यों ने आरक्षण को बढाकर 50 प्रतिशत कर दिया है। सरकार और गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित विभिन्न कौशल विकास और नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने निर्वाचित महिला नेताओं के प्रदर्शन में सुधार किया है।

राष्ट्रीय और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व

स्थानीय स्तर पर भागीदारी बढने के बावजूद, संसद और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम बना हुआ है, इसमें पूर्वाग्रह, पुरुष प्रधान पार्टी संरचनाएं, पारिवारिक दायित्व और संसाधनों की कमी प्रमुख बाधाएँ हैं। संरचनात्मक बाधाएं संसदीयया राज्य विधानसभा चुनावों में चुनाव लडने और जीतने की महिलाओं की क्षमता में रुकावट डालती हैं। पार्टी टिकट प्राप्त करना आवश्यक है, लेकिनयह प्रक्रिया केन्द्रीकृत और अक्सर

महिलाओं को इससे वंचित रखा जाता है, पार्टी टिकट पाने वाली कई महिलाओं के पारिवारिक राजनीतिक सम्बन्ध होते हैं: 2019 के लोकसभा चुनावों में महिला उम्मीदवारों में से 41: वंशवादी' थी।यह धारणा है कि महिलाओं के चुनाव जीतने की संभावना कम होती है, जिसके कारण महिलाओं के लिए पार्टी टिकटों की संख्या कम हो जाती हैं। आँकडो से पता चलता है, कि महिला उम्मीदवारों के जीतने की संभावना पुरुषों के बराबरया उनसे अधिक है। अध्ययनों से पता चलता है कि महिला विधायक आर्थिक संकेतकों का बेहतर प्रदर्शन करती हैं और उनके आपराधिकया भ्रष्ट होने की संभावना कम होती है। चुनाव प्रचार काफी चुनौतीपूर्ण होते हैं और पारिवारिक प्रतिबद्धताएं अक्सर महिलाओं की पूर्ण भागीदारी को सीमित कर देती हैं। महिलाओं को अपमान, दुर्भावहार और धमकियों का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी भागीदारी चुनौतीपूर्ण हो जाती हैं। चुनाव प्रचार के लिए वित्तपोषणएक महत्वपूर्ण बाधा है, क्योंकि कई महिलाओं के पास वित्तीय स्वतन्त्रता की कमी है।

अध्ययन के उद्देश्य

भारतीय राजनीति में महिला भागीदारी पर अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व, उनके सशक्तिकरण, और समानता को बढ़ावा देना है। यह अध्ययन – चुनावी प्रक्रिया, नीति निर्माण, और राजनीतिक पदो पर महिलाओं की संख्या बढ़ाने में आने वाली सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों (जैसे शिक्षा, पितृसत्तात्मक सोच, हिंसा) तथा उनके प्रभाव का विश्लेषण करता हैं।

1. संसद और राज्य विधानसभाओं में महिला सासदों/विधायकों की संख्यात्मक स्थिति और उनकी प्रभावी भूमिका का अध्ययन करना ।
2. राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं के सामने आने वाली बाधाओं, जैसे कि हिंसा, अनौपचारिक भेदभाव, और सीमित पारिवारिक/सामाजिक समर्थन की जाँच करना ।
3. यह समझना कि कैसे महिला नेतृत्व 'महिला– केन्द्रित नीतियों (स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा) को प्रभावित करता है ।
4. पंचायती राज (स्थानीय स्तर) से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक महिलाओं की भागीदारी से निर्णय लेने की प्रक्रिया में आए सकारात्मक बदलावों का मूल्यांकन करना ।
5. महिला आरक्षण (33:या अधिक) और अन्य सकारात्मक उपायों के माध्यम से भागीदारी बढाने के तरीके सुझाना ।
6. यह अध्ययन न केवल महिलाओं की वर्तमान स्थिति को रेखांकित करता है, बल्कि उन्हें मुख्यधारा की राजनीति में सशक्त बनाने के लिए आवश्यक सुधारों की वकालत भी करता है ।

भारतीय राजनीति में महिला भागीदारी की चुनौतियाँ

लोकतन्त्र में महिलाओं की भागीदारी लोकतान्त्रिक प्रगति और लैंगिक समानता काएक महत्वपूर्ण सूचक है। हॉलाकि भारत में प्रभावशाली महिला नेता रही है, फिर श्री पुरुषों की तुलना में महिलाओं की समग्र राजनीतिक भागीदारी कम बनी हुई है। महिलाओं की मतदान भागीदारी में बदलाव 2010 के दशक में ही देखने को मिला, जो कई अन्य देशों की तुलना में काफी बांद में है, जहाँ मतदान में लौगिक अन्तर 1990 के दशक में ही कम होना शुरू हो गया था।' संवैधानिक प्रावधानों और नीतिगत पहलों के बावजूद, शासन, विधायिका और राजनीतिक निर्णय लेने में महिलाओं का प्रतिनिधित्व अभी भी अपर्याप्त है ।

- **विधान सभाओं में अल्प प्रतिनिधित्व:** 2019 में सांसदों में से केवल 14: महिलायें थीं, और राज्य विधानसभाओं में तो प्रतिनिधित्व और भी कम है ।
- **सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ:** पितस्तात्मक मानसिकता महिलाओं की राजनीतिक अवसरों तक पहुँच को सामित करती है ।
- **राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव:** संसद में महिलाओं के लिए आरक्षण की मांग के बावजूद, महिला उम्मीदवारों के न्यूनतम प्रतिशत के लिए कोई कानूनी प्रावधान नहीं हैं।
- **वित्तीय बाधाऐं:** महिला उम्मीदवारों के पास अकसर धन, पार्टी का समर्थन नहीं होता है। जिससे चुनाव लडने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती हैं ।
- **धमकियाँ और डराना–धमकाना:** राजनीति में महिलाओं को हिंसा, ऑनलाइन दुर्व्यवहार और उत्पीडन के उच्च स्तर का सामना करना पड़ता है, जो सक्रिय भागीदारी को हतोत्साहित करता है।

महिलाओं को राजनीतिक सशक्तिकरण:

- **महिलाओं के लिए आरक्षण विधेयक:** संसद और राज्य विधानसभाओ में महिलाओं के लिए 33: आरक्षण लागू करें । महिला प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए राजनीतिक दलों के कोटा का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करें ।
- **राजनीतिक प्रशिक्षण और नेतृत्व विकास:** राजनीति में महिलाओं के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थापित करें। महिला उम्मीदवारों को वित्तीय सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करें।
- **लिंग– संवदेनशील – चुनावी सुधार:** महिला उम्मीदवारों के लिए अनिवार्य राजनीतिक निधि आंवटन लागू करें। चुनावी हिंसा और महिलाओं के खिलाफ धमकियों को रोकने के लिए कड़े कानून लागू करें।
- **जमीनी स्तर पर महिलाओं के प्रतिनिधित्व को मजबूत करना:** स्थानीय शासन निकायों (पंचायतो और नगरपालिकाओं) में महिलाओ का प्रतिनिधित्व बढाएं। स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी(और समुदाय– संचालित राजनीतिक सहभागिता पहलों का विस्तार करें।
- **मीडिया प्रतिनिधित्व और जन जागरूकता:** मीडिया में महिला नेताओं के उचित प्रतिनिधित्व को प्रोत्साहित करें। राजनीति में महिला नेतृत्व को कमजोर करने वालीरूढ़ियों का मुकाबला करें।
- **दोहरी जिम्मेदारी:** घरेलू कार्यों और पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण महिलाओं के लिए राजनीति में पूर्ण समय देना मुश्किल हो जाता हैं। अतरू पुरुषों को भी महिलाओं के घरेलू कार्यों में हाथ बटाना चाहिएवम् महिलाओं को राजनीति में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- **आर्थिक और शैक्षिक असमानताएँ:** आर्थिक और शैक्षिक असमानताएँ भी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में बाधा डालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कई महिलाओं के पास राजनीतिक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा करने के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधनों और शैक्षिक पृष्ठिभूमि का अभाव हैं।यह आर्थिक और शैक्षिक अन्तर महिलाओं के लिए राजनीतिक नेतृत्व के लिए आवश्यक कौशल और आत्म– विश्वास हासिल करना कठिन बना देता है।

निष्कर्ष

भारत में मतदान के मामले में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, लेकिन निर्णय लेने वाली भूमिकाओं में उनका प्रतिनिधित्व अभी भी अपर्याप्त है। हालाकि महिलाएं सक्रिय राजनीतिक हितधारक बन चुकी हैं फिर भी व्यवस्थागत बाधाएँ विधायी शक्ति और पार्टी नेतृत्व तक उनकी पहुँच को सीमित करती हैं। इस खाई को पाटने के लिए समावेशी नीतियां, चुनावी सुधार और नेतृत्व विकास पहल आवश्यक हैं। मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति, सामाजिक परिवर्तन के साथ मिलकर समान प्रतिनिधित्व औरएक मजबूत लोकतन्त्र का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। भारत के लोकतन्त्र का भविष्य शासन के सभी स्तरों

पर महिलाओं की समान भागीदारी पर निर्भर करता है। अब कारवाई करने का समय आ गया है–यह सुनिश्चित करना कि महिलाओं की आवाज सुनी जाए, उनके अधिकारों की रक्षा की जाए और भारत के भविष्य को आकार देने मे उनके नेतृत्व को मान्यता दी जाए।

सन्दर्भ सूची

1. भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी (Women's Participation in Indian politics) विषय पर सन्दर्भ पुस्तकें
2. भारतीय राजनीति में महिलाएँ: अवधारणा व विमर्श (डॉ. शुभ्रा परमार व अपर्णा झा)
3. महिलाएवम् भारतीय राजनीति (डॉ. जागृति चतुर्वेदी)
4. भारत में नारी राजनीतिक परिवर्तन (किताब महल)
5. भारत में पंचायती राज (प्रमोद कुमार अग्रवाल)
6. राजनीतिक नेतृत्व, (डॉ खीन्द्र कुमार वर्मा)
7. दृष्टि I-A-S- (www-drishtiias-com)
8. ध्येय I-A-S- (www- dhyeyaias-com)
9. Election Commisson of India (www-eci-gov-in)
10. भारतीय राजनीति और महिलाएं (डॉ. पंजाब आनन्दराव – चौहान)
11. भारत में महिला आंदोलन: विमर्श और चुनौतियाँ (ओरियंट ब्लैक स्वान)
12. भारतीय महिला राजनीतिज्ञ: संघर्ष से सफलता का सफर (डॉ. सीताराम आठिया)
13. श्रृंखला की कड़ियाँ (महादेवी वर्मा)
14. इंडियन वूमेन इन पॉलिटिक्स (गोस्वामी, बी. 2016)
15. भारत में महिलाओं की वैधानिक स्थिति (श्रीवास्तव सुधार रानी)
16. पंचायती राजएवम् बंचित महिला समूह का उभारता नेतृत्व (कुमावत ललित)
17. भारतीय समाज में नारी (गोयल सुनील 2003)